स्मृति-लेख

शिव ताण्डव और कथक नृत्य

डॉ. जयचन्द्र शर्मा

मानव मात्र इस संसार में जीवन यात्रा करता हुआ जहां से आया है वहीं चला जाता है। यात्रा का उद्देश्य समझने वाले व्यक्ति सफलता को प्राप्त करते हैं अन्यथा भटकाव तो है ही।

भगवान सूर्यनारायण की यात्रा चौबीस घण्टे में पूरी होकर दिन-रात का बोध कराती है। पृथ्वी की यात्रा पूरे वर्ष में समाप्त होकर पुन: प्रारम्भ हो जाती है।

इसी प्रकार नृत्यकार की यात्रा, कथक कला के सातों अवयवों की प्रस्तुति के पश्चात् समाप्त हो जाती है। यात्रा करना जहां सुखदायी है वहां कष्टदायी भी है। यात्रा छोटी हो या बड़ी उसे सफल बनाने के लिये कुछ सहयोगियों की आवश्यकता रहती है। एकाकी यात्रा कभी-कभी अत्यन्त कष्टदायी हो जाती है।

कथक कला के आचार्य की नृत्य यात्रा मंच पर उपस्थित होते ही ठाट क्रिया से प्रारम्भ होती है। वह सात घोड़ों (अवयवों) के रथ पर सवार होकर इस यात्रा को प्रारम्भ करता है। शास्त्रीय नृत्यों के अन्य प्रकारों में भी सात सहयोगियों के रूप में यात्रा कार्य चलता है। जैसे- प्राकृतिक नृत्य में सूर्य की सातों किरणे, ताण्डव नृत्य के सातों प्रकार, रामायण के सातों काण्ड एवं महाभारत के कथानक की प्रस्तुति हेतु चक्रव्यूह के सातों द्वार के क्रम को निभाना होता है।

भगवान आदित्य की यात्रा प्रारम्भ होती है तो उसके सात निम्न साथी सहयोग करते हुये चलते हैं। ऋषिगण मंत्रों का उच्चारण करते हैं, गन्धर्व गान करते हैं, अप्सराएं नृत्य करती हुई चलती हैं, यक्षगण रथ को सजाते हैं, नागगण बांधे रखते हैं, राक्षसगण पीछे से रथ को धक्का लगाते हैं और बाल्यखिल्य ऋषि आगे-आगे प्रशंसा करते हुए चलते हैं। इसी प्रकार कथक नृत्य में गुणिजन तत्कार मंत्र का आनन्द प्राप्त करते हैं, गन्धर्व स्वर ध्वनियों द्वारा नृत्य गीत गाते हैं या धुन बजाते हैं। लय जो अप्सरा के रूप में है विविध प्रकार की गति को प्रस्तुत करती है। यक्षगण के तौर पर मंच सज्जा वाले प्रकाश व मंच उपकरणों को सम्भालते हैं। नागगण के रूप में तबला व मृदंग वादक-ताल में कलाकार को बांधे रखते हैं ताकि वह भटक नहीं जाए, बाल्यखिल्य ऋषि के रूप में दर्शकगण कला की

प्रशंसा करते हैं।

नृत्यकार की यात्रा में सम्बन्धित साथियों का सहयोग नहीं मिले तो कलाकार की कला सफल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। यही क्रम संसार के समस्त कण-कण में व्याप्त है जिसके बिना किसी भी प्रकार की यात्रा सफल होना सम्भव नहीं है।

भगवान सूर्यनारायण की रथ यात्रा के अनुरूप ही कथक नृत्यकार की मंच यात्रा चलती है। इस नृत्य का प्राचीन स्वरूप सूर्य पूजा हेतु वैदिक शैली के आधार पर था जो युगानुकूल परिवर्तित होकर दरबारी नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। कथककला की प्रस्तुति में शिव ताण्डव के सातों प्रकारों को निभाया जाता है।

ताण्डव नृत्य के सात प्रकारों के नाम निम्न प्रकार हैं- संहार ताण्डव, सन्ध्या ताण्डव, उमा ताण्डव, कालिका ताण्डव, त्रिपुर ताण्डव, गोरी ताण्डव और आनन्द ताण्डव। इन सातों प्रकारों को गहराई से अध्ययन करने पर पाया जाता है कि ताण्डव के वे सातों रंग वर्तमान कथक नृत्य में मौजूद है। ऐसा अनुभव किया जाता है कि प्राचीनकाल के ताण्डव नृत्य के नामों में युगानुकूल परिवर्तन होकर कथक नृत्य के सातों अवयवों के रूप में ये प्रचलित हो गये। कथक के सातों अवयवों को ताण्डव नृत्य के सातों प्रकारों के साथ तारतम्य निम्न प्रकार से बैठता है:-

1. संहार ताण्डव (ठाट क्रिया)

संहार का अर्थ समेटना व इकट्ठा करना है। नृत्यकला का साधक जब ठाट क्रिया को प्रस्तुत करता है तो वह मन के समस्त दूषित भावों को समेट करके अर्थात उन्हें नष्ट करके शुद्ध एवं सात्विक भावों को प्रकट करता है। भगवान शंकर द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य का भावार्थ भी यही निकलता है।

संहार ताण्डव द्वारा उन्होंने पापों को नष्ट किया था व पापों को नष्ट करने का मतलब है, मन के दूषित भावों को समाप्त करना। नर्तक जब तक अपने मन के दूषित भावों को किसी निश्चित मुद्रा में उपस्थित होकर नष्ट नहीं कर देता है तब तक उसका नृत्य प्रदर्शन व भावाभिव्यक्ति सफल नहीं हो सकती। कथक कला का ठाट बनाना संहार ताण्डव के रूप में कला प्रदर्शन करना है।

2. सन्ध्या ताण्डव (इष्टपद)

भगवान सूर्यनारायण की पूजा हेतु सन्ध्या वंदन करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज भी पूजा-पाठी महानुभाव सन्ध्या करते हैं। सन्ध्या ताण्डव का अर्थ यहां पूजा नृत्य से है। नृत्यकला का आचार्य अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने की दृष्टि से

भक्ति प्रधान रचनाऐं नाचता है। प्राचीन काल में हमारे इष्टदेव सूर्यनारायण थे। शिव द्वारा जो नृत्य किया गया वह भगवान आदित्य को प्रसन्न करने के लिये था न कि किसी विशेष व्यक्ति की महफिल की शोभा बढाने के लिये। इस क्रिया में नर्तक नमस्कार, वंदना, आगमन, आदि भक्ति प्रधान रचना प्रस्तुत करता है। इस अंग में कथक कलाकार भक्ति प्रधान रचनाऐं नाच कर भगवान को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है जिसे सन्ध्या या ईष्टपद नाम से जाना जा सकता है।

3. उमा ताण्डव (नृत्यांग)

शास्त्रों में स्त्रियों के लिये लास्य नृत्य करने की आज्ञा दी है। उमा, शंकर की पत्नि है। शंकर ने उमा ताण्डव नृत्य किया हो ऐसा कहीं वर्णन नहीं आता है।

यहां उमा का अर्थ ब्रह्मज्ञान से है। ब्रह्मज्ञान हेतु जो नृत्य किया जाता है, वह नृत्य उमा ताण्डव की श्रेणी में माना गया है। कथक नृत्य का कलाकार जो रचनाऐं नाचता है उसमें पदाघात किया एवं अंगहार के माध्यम से नृत्यात्मक ध्वनियों द्वारा स्वयम्भू नाद उत्पन्न होता है। नाद ब्रह्म की साधना ही ब्रह्मज्ञान कराने में सहायक होती हैं। कथक नृत्य में 'नृत्यांग' अवयव के अर्न्तगत आने वाली समस्त क्रियाएं उमा-ताण्डव स्वरूप की जाती है। अत: कथक का यह अंग उमा ताण्डव है।

4. कालिका ताण्डव (जाति शून्य)

कालिका (दुर्गा) अर्थात रणचण्डी के रूप में जो क्रियाएँ की जाती है वह नृत्य कालिका ताण्डव का रूप धारण कर लेती है। कथक कला का साधक जब मंच पर जटिल लय-ताल में विविध रचनाएँ नाचता है तो वह क्रिया कालिका ताण्डव कहलाती है। शास्त्रकारों ने इस क्रिया को 'शक्ति ताण्डव' भी कहा है। कथक नृत्य के अन्तर्गत जातिशून्य रचनाऐं कठिन लयकारी में प्रस्तुत की जाती है वह क्रिया जाति-शून्य अर्थात कालिका ताण्डव कहलाती है।

5. त्रिपुर ताण्डव (भाव रंग)

भगवान शंकर ने बाणासुर राक्षस को मारा था। वाणासुर का नाम ही त्रिपुर है। नृत्यकार उक्त घटना को जब नृत्य द्वारा प्रस्तुत करता है तो वह त्रिपुर ताण्डव कहलाता है। ऐसी घटनाएँ शंकर के जीवन में अनेक घटी किन्तु इसी घटना को नृत्यकारों ने विशेष महत्व दिया इसका क्या कारण हो सकता है ? इसी विषय पर आगे विचार किया जा रहा है।

विद्वानों ने त्रिपुर का अर्थ तीनों लोकों से भी किया है। नृत्यकला की दृष्टि से जो नृत्य तीनों लोकों के कल्याण हेतु प्रस्तुत किया जाये उसे त्रिपुर- ताण्डव की संज्ञा दी गई है।

मानव मात्र में बाणासुर राक्षस जैसी दूषित प्रवृतियां पाई जाती हैं। इन प्रवृतियों को नष्ट करने पर ही तीनों लोकों का कल्याण हो सकता है। इसी भावना को लेकर कथक नृत्यकला का साधक 'भावरंग' (अवयव) क्रिया को प्रस्तुत करता है। वह दर्शकों को अपनी भावाभिव्यक्ति द्वारा समझाता है कि मानव हृदय में बाणासुर राक्षस की तरह जो दूषित प्रवृतियां जम कर बैठी है, उनको नष्ट करने पर ही सबका कल्याण होगा। कथक शैली में भावरंग के अन्तर्गत ऐसी ही रचना प्रस्तुत की जाती है। जो त्रिपुर-राक्षस जैसी भावनाओं को दमन करने की जानकारी कराती है।

6. गौरी ताण्डव (गतिभाव)

शंकर की पत्नी गौरी अति सुकुमार, गंगा की तरह निर्मल है। उसका ताण्डव नृत्य से क्या संबंध हो सकता है ? जब कि स्त्रियों के लिये पार्वती ने लास्य नृत्य की रचना की थी। ऐसी स्थिति में गौरी को ताण्डव नृत्य करने की क्या आवश्यकता हुई ? यह विचारणीय है। दूसरे अर्थ में विद्वानों ने गौरी को आठ वर्ष की कन्या कहा है। इतनी कम उम्र वाली कन्या का ताण्डव करना सम्भव नहीं है। यहां गौरी-ताण्डव का अर्थ निम्न प्रकार है।

गौरी एक बहुत ही सुन्दर व सुकुमार कन्या है। उससे संबंधित नृत्य मानव मन को मोहने वाला होता है। इस क्रिया के अन्तर्गत कथक नृत्य के 'गतिभाव' अवयव आते हैं। इनकी प्रस्तुति में नर्तक का शरीर गंगा नदी की लहरों की तरह निर्मल भावनाओं के साथ चलता है। नृत्यकला के कोमल भाव इस क्रिया द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं।

कथक नृत्य में गत-भाव करते समय राधा का बारम्बार यमुना तट पर जाना, गगरी भरना, सखियों के साथ क्रिड़ाएँ करना तथा कृष्ण को खोजने के हाव-भाव आदि क्रियाएं करना गौरी ताण्डव का ही स्वरूप है।

7. आनन्द-ताण्डव (तराना)

ताण्डव नृत्य का अन्तिम खण्ड आनन्दमय होने के कारण इसका नाम आनन्द ताण्डव रखा गया है। नृत्यकला के सामान्य दर्शकगण भी इस क्रिया को देख कर आनन्द विभोर हो जाते हैं।

कथक कला में अन्तिम अवयव तराना क्रिया है। इस क्रिया द्वारा वास्तव में सभी को आनन्द प्राप्त होता है। इस क्रिया में तत्कार की तैयारी, विभिन्न लयकारी तत्कार की प्रस्तुति, घुंघरुओं की लयबद्ध झंकार को सुनकर दर्शकों का हृदय भी उक्त झंकार के साथ झंकृत हो उठता है। कथक कला के सातों अवयवों में ताण्डव के सातों प्रकार इतने

घुले-मिले हैं जिन्हें समझने पर स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन ताण्डव नृत्य वर्तमान कथक नृत्य के अनुरूप ही था। प्राचीन शास्त्रीय नृत्य के समस्त दृश्य कथक शैली में ज्यों के त्यों विद्यमान हैं।

निदेशक
श्री संगीत भारती
बीकानेर (राजस्थान)